इकाई 11 जेरेमी बेंथम

इकाई की रूपरेखा

11.1 प्रस्तावना

11.2 जीवन और समय

11.3 उपयोगितावाद सिद्धांत

11.4 बेंथम का राजनीतिक दर्शन

11.5 पैनॉप्टिकन (बंदीगृहों का सुधार)

11.6 सारांश

11.7 अभ्यास

11.1 प्रस्तावना

उपयोगितावाद राजनीतिक सिद्धांत की मुख्य तौर पर एक ब्रिटिश विचारधारा है। यह विचारधारा कुछ लेखकों, राजनीतिज्ञों, प्रशासकों और समाज-सुधारकों के एक वर्ग की देन है। जेरेमी बेंथम, जेम्स मिल, और जॉन स्टुअर्ट मिल - इनमें सर्वाधिक प्रसिद्ध हैं। मूलतः उनकी रुचि राजनीति को विज्ञान का रूप देने के लिए राजनीतिक नियमों का एक ढाँचा तैयार करने में थी। व्यवहार में उन्होंने वैधानिक और सामाजिक सुधार तथा सक्षम राजनीतिक संस्थाओं की स्थापना की तत्काल आवश्यकता पर बल दिया। आम तौर पर उनके प्रभाव और विशेष कर बेंथम के कई सुधारों की अपनी कोशिश को काफी जन-समर्थन मिला। इसलिए जॉन स्टुअर्ट मिल द्वारा बेंथम को ब्रिटिश विचारधारा का जनक और गहन चिंतक बताना सर्वथा उचित था।

बेंथम न केवल अपने समय की सामाजिक और वैधानिक संस्थाओं में सुधार करना चाहता था, बल्कि सार्वभौमिक मताधिकार, छोटी अवधि की वार्षिक संसदों तथा गुप्त मतदान जैसे राजनीतिक सुधारों का भी प्रबल समर्थक था। वह फ्रांसीसी क्रांति से प्रभावित 'Philosophical radicals' (दार्शनिक सुधारवादी) नामक दल का संस्थापक था। इस दल के सदस्यों ने फ्रांसीसी क्रांति के बारे में बर्क की आलोचना को अस्वीकार किया और स्वाभाविक संस्थाओं का अधिकतम लोगों के अधिकतम सुख के आधार पर मूल्यांकन करने की वकालत की। उनका मानना था कि अगर कोई सामाजिक प्रथा इस सुख में वृद्धि नहीं करती तो उसमें सुधार होना चाहिए।

11.2 जीवन और समय

बेंथम का जन्म 1748 में इंगलैंड के एक धनी और सफल वकील के परिवार में हुआ था। ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के क्वीन्स कॉलेज (1760-63) में शिक्षा प्राप्त करने के बाद बेंथम ने **1763** से लंदन लॉ कोर्ट (London Law Courts) जाना शुरू किया। उस समय भावी वकीलों

के लिए कानून के बारे में जानने का एकमात्र तरीका था - अदालत की कार्यवाहियों को सुनना। यह बेंथम का सौभाग्य था कि ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय ने कुछ वर्ष पहले ही कानून के बारे में विलियम ब्लैकस्टोन के व्याख्यानों की श्रृंखला आयोजित करनी शुरू की। बेंथम ने 1763 में इन व्याख्यानों को सुना। जब ब्लैकस्टोन ने 1765 में अपने व्याख्यानों को प्रसिद्ध 'कमेंट्रीज़' (commentaries) के रूप में प्रकाशित किया तो बेंथम ने इसके कुछ अनुच्छेदों के बारे में एक बड़ा आलोचनात्मक लेख लिख कर हलचल मचा दी। जब बेंथम ने एक बार लिखना शुरू किया तो फिर उसने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। बेंथम के लेख खंडों में थे। बेंथम के मित्र जिनेवा के ऐटियन ड्यूमोंट (Etienne Dumont) ने बेंथम के आरंभिक लेखों को एक पुस्तक का रूप दिया और फिर फ्रांसीसी भाषा में उसके अनुवाद को 1802 में 'ए थ्योरी ऑफ लेजिस्लेशन' (A Theory of Legislation) शीर्षक से प्रकाशित किया। बेंथम के देशवासियों को यह पुस्तक केवल 1820 के दशक में उसके अंग्रेज़ी भाषा में अनुवाद के बाद ही उपलब्ध हो पाई। बेंथम की मूल रूप से अंग्रेज़ी में प्रकाशित पुस्तकों में 'ए फ्रेगमेंट ऑन गवर्नमेंट' (A Fragment on Government) (1776). 'एन इंट्रोडक्शन टू दि प्रिंसिपल्स ऑफ मोराल्स एड लेजिस्लेशन' (An Introduction to the Principles of Morals and Legislation) (I 789). और 'कांस्टीट्यूशनल (Constitutional Code) (1830) शामिल हैं। 'कोड' उनकी सबसे प्रतिष्ठित कृति मानी जाती है। बेंथम ने इसे तीन खंडों में प्रकाशित करने की योजना बनाई थी, लेकिन अपने जीवन-काल में वह इसका केवल एक खंड ही पूरा कर पाए।

बेंथम वकील कम और कानून-सुधारक अधिक था। उसने अपनी अधिकांश पुस्तकें इंगलैंड में कानूनी (वैधानिक) और राजनीतिक सुधार लाने के उद्देश्य से लिखी थीं। वह कैथरीन दि ग्रेट के सलाहकार के रूप में 1785 में रूस भी गया और वहाँ तीन वर्ष तक रहा। 1790 के दशक में स्वदेश लौटने पर बेंथम ने ब्रिटिश सरकार के साथ जेलों के सुधार के लिए एक अनुबंध किया और पैनॉप्टिकन (Panopticon) नामक आदर्श बंदीगृह का डिज़ाइन तैयार करने और उसका निर्माण करने का जिम्मा लिया। लेकिन इस परियोजना के विफल होने से बुरी तरह निराश होने के बाद बेंथम राजनीतिक संस्थाओं के सुधार में जुट गया। 1809 में वह पहली बार जेम्स मिल से मिला, जो बाद में जीवन-भर उसका सहयोगी रहा। उन दोनों ने 1824 में उपयोगितावाद (Utilitarianism) के दर्शन को समर्पित 'वेस्टमिन्स्टर रिव्यू' (Westminster Review) नामक पत्रिका शुरू की। 1832 में जब इंगलैंड में संसदीय सुधारों के लिए संघर्ष जारी था, बेंथम की मृत्यु हो गई।

11.3 उपयोगितावाद सिद्धांत (Utilitarianism)

बेंथम ने 'एन इंट्रोडक्शन टू दि प्रिंसिपल्स ऑफ मोराल्स एंड लेजिस्लेशन' के प्रथम अध्याय की शुरुआत इस तरह की - 'प्रकृति ने मनुष्यों को दो संप्रभु स्वामियों - दुख (पीड़ा) और सुख (आनंद) - के अधीन रखा है। ये ही इस बात का संकेत देते हैं कि हमें क्या करना चाहिए और यह तय करते हैं कि हम क्या करेंगे। उचित और अनुचित तथा कारण और प्रभावों की ज़ोर उनके हाथ में है। हम जो भी करते हैं, जो भी कहते हैं, जो भी सोचते हैं, इन सबका नियंत्रण उनके

पास है। मनुष्य उनके इस नियंत्रण की अनदेखी का दावा भले ही करता रहे, लेकिन वास्तव में वह हमेशा इनके अधीन रहता है। उपयोगिता का सिद्धांत इस अधीनता को मानता है और उसे उस सिद्धांत का आधार मानता है जिसका उद्देश्य तर्क और विधान द्वारा सुख की इमारत खड़ी करना है।' (पृ.11)

बेंथम के लिए उपयोगितावाद एक वर्णनात्मक और मानक सिद्धांत, दोनों ही हैं। यह न केवल इस बात का वर्णन करता है कि मनुष्य अधिकतम सुख पाने और न्यूनतम दुख देखने के लिए कैसे कार्य करता है, बल्कि वह ऐसे कार्यों का निर्धारण और समर्थन भी करता है। उपयोगिता के सिद्धांत (या अधिकतम सुख सिद्धांत या सुख सिद्धांत) के अनुसार मनुष्य को काम करने के लिए प्रेरित करने वाले सभी कार्यों का कारण सुख पाने की इच्छा है। उपयोगिता या खुशी को आनंद

होती है तो वह उपयोगी है - 'उपयोगिता का अर्थ किसी वस्तु के उस गुण से है जिससे लाभ (profit), फायदा (advantage), आनंद (pleasure), भलाई अथवा अच्छा (good) या खुशी (happiness) उपलब्ध होती है।' मनुष्य का हित भी उसी (अर्थात् आनंद) में है - 'अगर किसी चीज से मनुष्य के सुखों के कुल योग में वृद्धि होती है या दुखों के कुल योग में कमी होती है तो वह वस्तु उसके हित में होती है।' (पृ.12)

'दि प्रिंसिपल्स' में बेंथम ने उन चौदह साधारण सुखों को गिनाया है जो मनुष्य को प्रभावित करते हैं। इनमें इंद्रिय (sense), धन-संपत्ति (wealth), कौशल (skills), शक्ति (power), दयालुता (benevolence) और दुष्टता (malevolence) शामिल हैं। घटते दुख का अर्थ भी है अधिक आनंद मिलना। ऐसे बारह प्रकार के दुख हैं जिनसे मनुष्य बचना चाहता है जैसे कि इंद्रियों के दुख या बदनामी का दुख।

मनुष्य न केवल इस प्रकार से व्यवहार करते हैं बल्कि वे आनंद या पीड़ा देने वाली गतिविधियों को गिनाने के लिए अच्छी अथवा बुरी शब्दों का प्रयोग करते हैं। यह परिस्थिति हॉब्स जितनी ही पुरानी है। बेंथम और उपयोगितावाद के एक नैतिक सिद्धांत होने के उसके दावे में नई बात यह है कि उसने ऐसी गतिविधि का समर्थन किया है जिन चीज़ों से आनंद प्राप्त होता है, वे नैतिक रूप से अच्छी होती हैं और जिनसे दुख पहुँचता हैं वे बुरी होती हैं और उनसे बचना चाहिए। मानव कल्याण में केवल तभी वृद्धि हो सकती है जब मनुष्य को अधिक सुख और न्यूनतम दुख मिले। 1776 में 'फ्रेगमेंट' की प्रस्तावना में बेंथम ने लिखा - 'अधिकतम लोगों का अधिकतम सुख ही सही और गलत का मापदंड है।' प्रश्न यह है कि मनुष्य द्वारा अपने लिए सुख की खोज करने में नैतिक क्या है?

जब यह आरोप लगा कि उपयोगितावाद एक नैतिक सिद्धांत के बजाय वास्तव में एक स्वार्थी मनोवैज्ञानिक सुखवादी सिद्धांत है तो बेंथम का उत्तर था कि उपयोगितावाद यह नहीं कहता कि मनुष्य केवल अपने ही सुख की इच्छा करे। एक विशेष प्रकार के आचरण के बारे में तय करते समय मनुष्य को अपने स्वयं के सुख और उस कार्य से प्रभावित होने वाले बाकी सभी लोगों के सुख के बारे में निष्पक्ष होना चाहिए। '.... यदि सारा सुख उसका स्वयं का सुख है या दूसरों का सुख है।' (पारिख में उद्धृत, पृ.91) तब हम स्पष्ट रूप से कह सकते हैं कि उपयोगितावाद का

संबंध दूसरों के सुख से है। दंड का उदाहरण लें - यदि दंड की उपयोगिता होनी है और उपयोगिता से सुख उत्पन्न होना है तब स्वाभाविक है कि दंड दिए जाने वाले व्यक्ति को सुखी नहीं बनाया जा सकता। बल्कि यह फिर से अपराध होने की संभावना कम करके दूसरों को सुखी बनाएगा। यह सत्य है कि बेंथम के लिए समुदाय एक 'अवास्तविक/काल्पनिक' (fictitious) समूह है जोकि व्यक्तिगत सदस्यों के मेल से अधिक कुछ नहीं है। 'समुदाय का हित तब.....इसका गठन करने वाले विभिन्न सदस्यों के हितों का योग है।' (दि प्रिंसिपल्स, पृ.12) हालांकि यह सत्य है कि दूसरों के हित (सुख) उतने ही महत्वपूर्ण हैं जितना कि किसी एक व्यक्ति का हित।

व्यक्ति की गतिविधियों का संदर्भ, इससे प्रभावित होने वाले लोगों का दायरा निर्धारित करता है। सरकारी अधिकारियों की गतिविधियों से देश के सभी लोग प्रभावित होते हैं। इसलिए सरकार को राष्ट्रीय स्तर पर सुख और दुख की तुलना करनी होती है। किसी व्यक्ति को केवल उन्हीं थोड़े से लोगों के सुखों और दुखों को ध्यान में रखना पड़ता है जो उसके कार्यों से प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित होते हैं। अतः सरकार को अपने सभी नागरिकों के सुख या कल्याण की चिंता होती है जबकि व्यक्ति को अपने स्वयं के अलावा दूसरे लोगों के सुख को भी ध्यान में रखना होता है - तभी उपयोगितावाद एक नैतिक सिद्धांत बनता है।

बेंथम ने मानवीय गतिविधि के चार सामान्य उद्देश्यों की पहचान की। दयालुता के मात्र सामाजिक उद्देश्य से बहुत कम लोग ही काम करते हैं। ऐसे दयालु व्यक्ति अपने स्वयं के सुख की परवाह किए बिना दूसरों के सुख के लिए काम करते हैं। प्रतिष्ठा या प्रशंसा के अर्द्ध-सामाजिक उद्देश्य से काम करने वाला व्यक्ति दूसरों के सुखों के लिए तभी काम करता है जब इससे उसके अपने सुखों को भी बढ़ावा मिलता है। अधिकतर लोग अपने हित के असामाजिक उद्देश्य से काम करते हैं, जब व्यक्ति अपने सुख को ढूँढता है और ध्यान रखता है कि दूसरे को कष्ट न पहुँचे परंतु उनके सुख की तरफ भी नहीं देखता। और अंत में, कुछ ऐसे लोग होते हैं जो समाज-विरोधी उद्देश्यों के प्रभाव में आकर दूसरों को नुकसान पहुँचाने में सुख का अनुभव करते हैं।

बेंथम ने किसी कार्य से प्राप्त होने वाले सुख या दुख (आनंद अथवा पीड़ा) के बीच संतुलन का पता लगाने के लिए एक मापदंड भी प्रदान किया। सुखवादी मापदंड के अनुसार व्यक्ति के कार्यों से प्रभावित होने वाले लोगों के सुख या दुख की पैमाइश के लिए तीव्रता **(intensity).** अवधि **(duration),** निश्चितता **(certainty)** या अनिश्चितता **(uncertainty).** समय की निकटता (propinquity) अथवा दूरी **(remoteness)** का अंकों में मूल्यांकन करना चाहिए और व्यक्ति को कोई कार्य केवल तभी करना चाहिए जब उससे प्राप्त होने वाले सुख का मूल्य दुख से अधिक हो। व्यक्ति को सुख उत्पन्न करने वाले कार्य की प्रजनन-क्षमता **(fecundity)** के साथ-साथ, प्राप्त होने वाले सुख की विशुद्धता **(purity)** और विस्तार **(extent)** का भी ध्यान रखना चाहिए। सुख और दुख की पैमाइश करते समय व्यक्ति को उस वस्तु (जोकि सुख-दुख का स्रोत है) और उस व्यक्ति (जिसके सुख-दुख की गणना की जा रही है), दोनों में से इन्हें सावधानीपूर्वक घटा देना चाहिए। इसका अर्थ है कि सुख में प्रत्येक को एक माना जाता है और परिभाषा के आधार पर मिस्र का इतिहास लिखने जैसी उम्दा गतिविधि से प्राप्त सुख के मूल्य को जुआ खेलने जैसे काम से प्राप्त सुख से अधिक नहीं माना जा सकता।

मनुष्य अपना और दूसरों का सुख चाहता है। उसे स्वयं की और दूसरों के सुख की कामना करनी चाहिए। हालाँकि माँगना एक बात है, प्रश्न यह है कि वे जो चाहते हैं उसे कैसे प्राप्त करें। सामान्य रूप से, मनुष्य जिस सुख को खोज रहे हैं, उसे प्राप्त करने के लिए मानव को क्या करना चाहिए? बेंथम के अनुसार, मानव सुख, मनुष्य द्वारा एक-दूसरे को प्रदान की जाने वाली सेवाओं पर आधारित है। अधिकारों (rights) और उत्तरदायित्वों (obligations) की व्यवस्था कायम करके सरकार इन सेवाओं को सुनिश्चित कर सकती है। राजनीतिक समाज का अस्तित्व इसलिए है क्योंकि मनुष्यों के सुख में वृद्धि के लिए उन्हें एक-दूसरे को सेवाएँ प्रदान करने पर बाध्य करने के लिए सरकार का होना आवश्यक है। इस तरह, बेंथम अपने उपयोगितावाद से अपने राजनीतिक दर्शन में प्रवेश करता है।

11.4 बेंथम का राजनीतिक दर्शन

बेंथम का कहना था कि 'सरकार अपने अधिकार का प्रयोग बाध्यता (coercion) के बिना नहीं कर सकती और बाध्यता दुख उत्पन्न किए बिना उपयोग नहीं की जा सकती।' (लीडिंग प्रिंसिपल्स ऑफ ए कॉन्स्टीट्यूशनल कोड फॉर ऐनी स्टेट, 1823, पारिख में पृष्ठ 195 पर) अब, दुख से बचना होगा इसलिए सरकार का औचित्य केवल यह है कि इसके बिना समाज में और अधिक दुख उत्पन्न होंगे। सरकार के अस्तित्व का उद्देश्य यह है कि वह दुख उत्पन्न करने वाले कुछ कार्यों पर प्रतिबंध लगाए ताकि कोई नागरिक ऐसे कार्य करने के लिए प्रोत्साहित न हो। या जैसा कि हमने पिछले भाग के अंत में कहा था कि बाह्यता, जोकि परिभाषा के अनुसार सरकार की प्रकृति का हिस्सा है, समाज कल्याण में और अधिक वृद्धि के लिए अधिकारों तथा बंधनों की व्यवस्था उत्पन्न करने के लिए आवश्यक है।

क्या बेंथम ने मनुष्यों के लिए राजनीति से पूर्व की अवस्था की कल्पना या स्थापना की थी? बेंथम ने प्राकृतिक समाज से राजनीतिक समाज की तुलना की तथा राजनीतिक समाज की व्याख्या इस प्रकार की - 'जब कुछ लोग (जिन्हें हम प्रजा कह सकते है) किसी ज्ञात व्यक्ति या व्यक्तियों की सभा जिसका एक निश्चित स्वरूप है (जिन्हें हम शासक या शासन करने वाले कह सकते है) की आज्ञा का पालन करने के अभ्यस्त माने जाते हैं, तो ऐसे सभी लोगों को (प्रजा और शासक) एक राजनीतिक *समाज* कहा जाता है।' (फ्रेगमेंट, पृ.40) प्राकृतिक अवस्था के बारे में बेंथम का कहना था कि 'जब अधिकतर व्यक्ति एक-दूसरे से वार्तालाप करने के अभ्यस्त होते हैं, लेकिन वे ऊपर कही गई बात के अभ्यस्त नहीं हैं तो उन्हें एक प्राकृतिक *समाज* कहा जाएगा।' (वही, पृ.40) प्राकृतिक अवस्था असामाजिक या समाज-विरोधी नहीं है। यह एक ऐसा गतिशील (ongoing) समाज है, जिसमें लोग एक-दूसरे से वार्तालाप अर्थात् अंतःक्रिया करते हैं। बेंथम के अनुसार ऐसा कोई विशुद्ध राज्य या प्राकृतिक अथवा राजनीतिक समाज नहीं था, लेकिन दोनों के बीच निरंतरता थी - 'तदनुसार आज्ञाकारिता की प्रवृत्ति के अनुपात में सरकार अधिक दक्ष है, इससे पीछे, कम दक्षता के अनुपात में, प्राकृतिक अवस्था का दृष्टिकोण .....' (वही, पृ.40)

सरकार का सामान्य उद्देश्य अधिकांश लोगों का अधिकतम सुख प्रदान करना है। विशेष शब्दों में सरकार के उद्देश्य हैं - 'जीवन-सामग्री (subsistence), संपन्नता (abundance). सुरक्षा (secu-

rity), और समता (equality) इन सभी को अधिक से अधिक प्रदान करना, जहाँ तक कि यह बाकी के अधिकतम से मेल खाते हों।' (लीडिंग प्रिंसिपल्स, पृ.196) बेंथम ने जीवन-सामग्री को प्रत्यक्ष शारीरिक कष्ट पहुँचाने वाली सभी वस्तुओं की अनुपस्थिति के रूप में परिभाषित किया। उन्होंने सरकार को रोज़गार सृजन के लिए औद्योगीकरण को प्रोत्साहित करने की सलाह दी ताकि प्रत्येक व्यक्ति अपनी जीवन-आवश्यकताओं की देखभाल कर सके। लेकिन यदि कोई व्यक्ति ऐसा नहीं कर पाता, तो सरकार को गरीबों की भलाई के लिए धनी लोगों के योगदान से एक संयुक्त कोष स्थापित करना होगा।

यदि जीवन-सामग्री, नागरिकों को दुख से दूर रखती है तो उनके सुख को अधिकतम करने के लिए संपन्नता (abundance) आवश्यक है। संपन्नता सुनिश्चित करके अर्थात् लोगों की मूल आवश्यकताएँ पूरी करने के बाद उनके हाथों में अतिरिक्त संपदा सौंपकर सरकार नागरिकों को उनकी सभी इच्छाएँ पूरी करने के लिए प्रोत्साहित करती है। बेंथम का विचार है कि प्रत्येक व्यक्ति को उसके कार्य का उचित पुरस्कार और उसकी वस्तुओं की सुरक्षा सुनिश्चित करके संपदा को सबसे बढ़िया ढंग से आगे बढ़ाया जा सकता है। इसके अलावा, राज्य को नए औज़ारों और कल-पुर्जों के अनुसंधान को भी बढ़ावा देना चाहिए तथा सामाजिक दृष्टि से उपयोगी खोजों को पुरस्कार देना चाहिए। उसे तकनीकी मानव-शक्ति का विकास करना चाहिए और मितव्ययता तथा कठिन परिश्रम को प्रोत्साहित करना चाहिए। 'सबसे अधिक उसे धार्मिक चिंतन के उस भाग का मुकाबला करना चाहिए जोकि मनुष्यों को आराम और विलासिता से घृणा करने के लिए प्रोत्साहित करता है।' (पारिख, पृ.41)

बेंथम के अनुसार सुरक्षा के कई अंग हैं - व्यक्ति, संपत्ति, सत्ता, प्रतिष्ठा और जीवन-परिस्थितियों की सुरक्षा। जीवन-परिस्थितियों की सुरक्षा से बेंथम का अर्थ सामाजिक स्थिति जैसी किसी चीज़ से है। इनमें से प्रत्येक के बारे में हर नागरिक को सुरक्षा प्रदान करने का उत्तरदायित्व सरकार का है। उदाहरण के लिए, संपत्ति की सुरक्षा यह देखते हुए प्रदान की जाती है कि प्रत्येक व्यक्ति वैध समझौता करे।

बेंथम ने नैतिक, बौद्धिक, आर्थिक और राजनीतिक - इन चार प्रकार की असमानताओं पर चिंता जताई। उसने नैतिक और बौद्धिक असमानताएँ कम करने के लिए कोई उपाय नहीं सुझाए, लेकिन संपत्ति और सत्ता की असमानताएँ कम करने की बात जरूर की। धनी और निर्धन लोगों के बीच अंतर दूर करने होंगे - 'अमीरी के साधनों की भरमार में अगर संबद्ध व्यक्तियों के पास साधन, समानता से जितना परे होंगे, तो इन तमाम साधनों से मिलने वाली खुशी उतनी ही कम होगी।' (लीडिंग प्रिंसिपल्स, पृ.200) लेकिन संपत्ति की सुरक्षा की कीमत पर नहीं। सत्ता की असमानताएँ दूर की जा सकती हैं - सार्वजनिक पदों के साथ जुड़ी शक्ति को 'न्यूनतम करके, प्रत्येक विवेकशील वयस्क को उन पदों के लिए योग्य घोषित करके उन पदों पर आसीन लोगों को उनकी शक्ति के अधीन लोगों के प्रति उत्तरदायी बनाकर।' (पारिख, पृ.41) सरकार द्वारा प्रदान की जाने वाली अंतिम सेवा है - नागरिकों में दया की भावना को प्रोत्साहित करना ताकि समाज का प्रत्येक सदस्य, स्वेच्छा और आनंद से ऐसी 'असंख्य छोटी सेवाएँ' करे, जिन पर समाज के सुखों की इमारत खड़ी होती है। उदाहरण के लिए, सरकार को 'मनुष्यों की सहानुभूति

को सीमित करने वाले और बाहरी लोगों को इंसान न मानने वाले धार्मिक और कट्टरपंथी पूर्वग्रहों का मुकाबला करना चाहिए।' (पारिख, पृ.42)

अब तक हमने देखा कि सरकार विशेष तरीकों से अपने उद्देश्यों की पूर्ति कैसे करती है। मगर इससे भी बढ़कर महत्वपूर्ण यह है कि सामान्य रूप से सरकार अपने उद्देश्यों की पूर्ति कैसे करती है। बेंथम ने मनुष्य को एक ऐसा प्राणी माना है जो अपनी भलाई के लिए दूसरों पर इतना अधिक निर्भर है कि यदि मनुष्यों ने एक-दूसरे को विभिन्न प्रकार की सेवाएँ प्रदान नहीं कीं तो मानव जीवन कष्टप्रद और यहाँ तक कि असंभव हो जाएगा..... समाज अंततः मनुष्य द्वारा एक-दूसरे को प्रदान की जाने वाली सेवाओं की व्यवस्था है। सरकार बंधनों और अधिकारों की व्यवस्था स्थापित करके इन सेवाओं को सुनिश्चित करती है। सरकार यह कार्य अपराधों की व्यवस्था और उनके लिए दंड की व्यवस्था स्थापित करके करती है। उदाहरण के लिए, कर न देना और दूसरे का धन चोरी करना दंडनीय अपराध है। ये दंडनीय अपराध मनुष्यों द्वारा एक-दूसरे को प्रदान की जाने वाली सेवाएँ निर्धारित करते हैं - संयुक्त संसाधन कोष में योगदान की सकारात्मक सेवा अथवा किसी के संपत्ति के अधिकार में हस्तक्षेप न करने का बंधन। बदले में ये सेवाएँ या बंधन सबके अधिकार निर्धारित करते हैं जैसे कि मेरा संपत्ति या जीवन-सामग्री का अधिकार। प्रत्येक अधिकार का अस्तित्व केवल उससे जुड़े बंधन के कारण ही होता है, और सरकार को इन बंधनों को निर्धारित करते समय काफी सावधानी बरतनी चाहिए। 'मेरे अधिकार, मेरे सुख का स्रोत हो भी सकते हैं अथवा नहीं भी। लेकिन वे दूसरों पर जो बंधन लगाते हैं वे निश्चित ही उनके दुख का स्रोत बनते हैं। इसलिए सरकार को तब तक अधिकारों को सुख का साधन नहीं बनाना चाहिए, हालांकि वे सुख के साधन हैं, जब तक कि यह पूरी तरह से निश्चित न हो जाए कि उनसे प्राप्त होने वाले संभावित लाभ उनसे होने वाली कुछ हानि से काफी अधिक होंगे।' (पारिख, पृ.35)

किसी भी राजनीतिक समाज में संप्रभु नागरिकों से अपनी इच्छानुसार कार्य करवाने के लिए शासक के सामने दो मार्ग होते हैं - (1) उनकी इच्छा को प्रभावित करके जिसे बेंथम आज्ञाकारिता (imperation) कहता है; और (2) शारीरिक दंड की धमकी द्वारा जिसे बेंथम ने शारीरिक दंड (contrectation) बताया है। यद्यपि पहली शक्ति दूसरी पर आधारित है जिससे दूसरी शक्ति शासक की प्रभुता का आधार बनती है, बेंथम का कहना है कि आज्ञाकारिता पर आधारित राजनीतिक समाज, शारीरिक दंड की धमकी पर आधारित समाज से अधिक स्थिर तथा अधिक लंबा चलने वाला होता है।

कोई यह कैसे सुनिश्चित करे कि सरकार, अधिकारों और बंधनों की ऐसी व्यवस्था स्थापित करेगी जिससे अधिकतम लोगों को अधिकतम सुख सर्वोत्तम ढंग से मिल सकेगा। बेंथम के उपयोगितावाद ने उसे यह विश्वास दिलाया कि लोकतांत्रिक स्वरूप वाली सरकार ही लोगों के हितों को सर्वोत्तम ढंग से पूरा करेगी। केवल ऐसी सरकार में ही प्रजा और शासक के हितों के बीच सद्भाव स्थापित किया जा सकता है। लोकतंत्र में शासकों को अधिकतम आनंद, सत्ता में वापसी से प्राप्त होता है और उन्हें मालूम है कि वे शासितों (प्रजा) के सुखों को अधिकतम करके या दूसरे शब्दों में उनके हितों और कल्याण को ध्यान में रखकर सबसे बढ़िया तरीके से ऐसा कर सकते हैं। उन्हें पता होता है कि यदि वे शासितों के हितों के विरुद्ध काम करेंगे तो उन्हें सत्ता

से बाहर कर दिया जाएगा। इस तर्क से बेंथम ने जो तर्कसंगत परिणाम निकाला, वह है - सभी वयस्कों को मताधिकार, सतत (frequent) राष्ट्रीय चुनाव (और साल में एक बार), सरकारी कामकाज में पारदर्शिता अर्थात स्वतंत्र प्रेस, सरकारी कार्यालयों तक सभी की निर्बाध पहुँच और विधायिका के अधिवेशनों में भाग लेने का अधिकार। बेंथम का मानना है कि 'जब एक बार वार्षिक चुनाव, सबको मताधिकार और पूर्णतम प्रचार की व्यवस्था स्थापित हो जाएगी तो कोई भी सरकार, कभी भी, जन-समुदाय की कीमत पर अपना हित साधने की सपने में भी नहीं सोचेगी।' (पारिख, पृ.31)

11.5 पैनॉप्टिकन (बंदीगृहों का सुधार) (Panopticon)

बेंथम ने 1790 के दशक में ब्रिटिश सरकार के लिए जो मॉडल जेल बनाई, उसे उसने 'पैनॉप्टिकन' (बंदीगृहों का सुधार) नाम दिया। सरकार ने भूमि का एक टुकड़ा खरीदा जिस पर बनने वाली नई जेल के निर्माण कार्य की देख-रेख बेंथम को करनी थी। लेकिन, सन 1802 के आसपास यह परियोजना विफल हो गई जिससे बेंथम को बड़ी निराशा हुई।

'पौनॉप्टिकन' के डिजाइन का किसी भी अनुशासनात्मक संस्थान के लिए मॉडल के तौर पर उपयोग किया जा सकता था। पौनॉप्टिकन केवल एक बंदीगृह न होकर स्कूल, अस्पताल, फैक्टरी और सैन्य बैरकों की इमारत किसी भी तरह का हो सकता था। फूकॉल्ट (Foucault) की शक्ति की एक नई तकनीक विकसित करने का श्रेय बेंथम को दिए जाने से पैनॉप्टिकन का विचार आज फिर महत्वपूर्ण हो गया है। पैनॉप्टिकन 'दंड देने की व्यवस्था के दमनकारी इतिहास की निगरानी की व्यवस्था में परिवर्तन के क्रांतिकारी विचार' को प्रस्तुत करता है। (एम.फूकॉल्ट, पॉवर/नॉलेज, 1980, पृ.38) फूकॉल्ट ने बंदीगृह भवन की बनावट का इस तरह वर्णन किया है - 'अंगूठी की बनावट वाली एक घेरदार इमारत। इसके मध्य में एक मीनार है जिसकी बड़ी-बड़ी खिड़कियाँ घेरे के भीतरी भाग में खुलती हैं। बाहरी इमारत छोटी-बड़ी कोठरियों में विभाजित है, जिनमें से प्रत्येक इमारत की पूरी मोटाई तक फैली हुई है। इन कोठरियों में दो खिड़कियाँ हैं, एक अंदर की ओर मध्य मीनार के सामने की तरफ खुलती है जबकि दूसरी बाहर की ओर खुलती है जिसके जरिए पूरी कोठरी में धूप पहुँचती है। अब मीनार पर पहरेदार को तैनात करने और प्रत्येक कोठरी में एक-एक पागल, रोगी, अपराधी, श्रमिक और स्कूली विद्यार्थी को डालने की आवश्यकता है। पीछे का प्रकाश मध्य मीनार से कोठरियों में रखे गए थोड़े से कैदियों के छायाचित्र लेने में सहायता करता है। संक्षेप में काल-कोठरी के सिद्धांत के विपरीत दिन की रोशनी और पहरेदार द्वारा नज़र रखकर कैदियों को अधिक कुशलता से नियंत्रण में रखा जाता है.....।' (वही, पृ.147) वे कैदी जिनका एक-दूसरे से कोई संपर्क नहीं है, यह अनुभव करते हैं कि पहरेदार उन पर लगातार नज़र रखे हुए है। 'यहाँ हथियार, शारीरिक हिंसा या भौतिक दबाव की कोई आवश्यकता नहीं है, बल्कि एक नज़र ही काफी है। एक ऐसी निगरानी, जिसके अंतर्गत अंत में एक दिन प्रत्येक व्यक्ति इसे उस सीमा तक आत्मसात कर लेगा कि वह स्वयं अपनी परहेदारी करने लगेगा। इस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति इस निगरानी का अपने ऊपर और अपने विरुद्ध उपयोग करेगा।' (वही, पृ.155)

सत्ता की जमींदारी और राजशाही व्यवस्था को उखाड़ फेंकने और इसके स्थान पर सत्ता के आधुनिक प्रचार के नए स्वरूप को स्थापित करने के लिए राजनीतिक सिद्धांत में क्रांति लानी होगी चाहे इसके लिए कोई भी बदनामी क्यों न लेनी पड़े। उदारवाद के आलोचकों ने हमेशा यह दावा किया है कि उदार सिद्धांतवादियों के लिए सरकार और नागरिकों के बीच संबंध, पैनॉप्टिकन (बंदीगृहों का सुधार) से लगभग मिलता-जुलता है। उदारवादी, नागरिकों के सीधे संपर्क को मानते। उनके अनुसार, प्रत्येक नागरिक की सरकार की आज्ञा मानने की अलग-अलग राजनीतिक बाध्यता ही नागरिक संगठन को जोड़ने वाली शक्ति है। हालांकि उदारवाद दावा करता है कि सरकार, शासितों की सहमति पर निर्भर है लेकिन आलोचकों के अनुसार (जैसा कि पैनॉप्टिकन के मॉडल में दर्शाया गया है) यह सहमति काल्पनिक या बनावटी है।

बेंथम के उदारवादी साथियों (जोकि उदारवादी परंपरा के दक्षिणपंथी खेमे से हैं) ने भी उपयोगितावाद के कुछ मूल सिद्धांतों की आलोचना की है। उदाहरण के लिए, किमलिका (kymlicka) ने कहा कि बेंथम का यह विचार गलत है कि मनुष्य केवल सुख चाहता है या उसे केवल सुख की इच्छा करनी चाहिए। यदि एक व्यक्ति स्वयं को एक ऐसी मशीन पर टांग देता है जो और कुछ किए बिना बस आनंद की उत्तेजना पैदा करती है तो वह उसे संतुष्ट नहीं कर पाएगी। मनुष्य कुछ काम केवल इसलिए करता है क्योंकि वह उन्हें करना चाहता है, न कि केवल उनसे प्राप्त होने वाले आनंद की उत्तेजना के लिए।

बेंथम भी अन्य महत्वपूर्ण राजनीतिक चिंतकों की तरह अपने समय की उपज था। यह सत्य है कि स्व-हित (self-interest), अहंवाद (egoism) और व्यक्तिवाद (individualism) उसके उपयोगितावादी सिद्धांत के आवश्यक आधार हैं। हालाँकि मनुष्य उसके लिए एक बनावटी संगठन था, तो भी कानून का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य दूसरों के सुख में वृद्धि करना था न कि किसी एक के अर्थात् निजी हित और सार्वजनिक हित का विलय।

बेंथम किसी भी प्रकार के दमन और निरंकुशता के विरुद्ध था और उसे यह ज्ञात हो गया था कि वैधानिक व्यवस्था को सक्षम, स्पष्ट, पारदर्शी और सरल बनाने के लिए इसमें सुधार बहुत आवश्यक है। उसके सभी ग्रंथों में उसका मानवतावाद झलकता है और इंगलैंड के लोकतंत्र में पहला बड़ा सुधार, 1832 का सुधार अधिनियम, उसके अथक प्रयासों से ही संभव हुआ था।

11.6 सारांश

बेंथम समानता में विश्वास करता था। प्रत्येक वयस्क अपने हितों का सबसे अच्छा निर्धारक है और एक व्यक्ति की प्राथमिकताओं को दूसरों के समान ही महत्व दिया जाना चाहिए। किसी भी सरकार का उद्देश्य नागरिकों की खुशी होना चाहिए - अधिकतम लोगों का अधिकतम सुख। सरकार विभिन्न व्यक्तियों के आनंद और पीड़ा की समान पैमाने पर तुलना के आधार पर प्राप्त परिणामों द्वारा प्रदान की गई प्राथमिकताओं के आधार पर सार्वजनिक हित निर्धारित कर सकती है। दुर्भाग्य से, बेंथम के आलोचकों की समस्या यह है कि काफी हद तक हस्तक्षेप-रहित

अर्थव्यवस्था और सामाजिक क्षेत्र में अनुशासन एवं शक्ति के नए रूपों से लगता है कि बेंथम की सोच के अनुरूप, अधिकतम लोगों के अधिकतम सुख की अवधारणा आगे बढ़ रही है।

11.7 अभ्यास

1. क्या बेंथम की आनंद की अवधारणा और यूनानी सुखवाद मत के बीच कोई अंतर है?
2. प्लेटो, लॉक या रूसो जैसे लगभग प्रत्येक राजनैतिक दार्शनिक ने कहा है कि सरकार का लक्ष्य 'सार्वभौमिक हित' या समाज का 'सार्वजनिक लाभ' होना चाहिए। जब बेंथम सरकार से कहता है कि वह 'समूचे समुदाय का हित' देखे, तो वह अन्य दार्शनिकों से किस प्रकार भिन्न है?
3. बेंथम ने प्राकृतिक अधिकारों के सिद्धांत को बैसाखियों पर टिकी बेहूदगी क्यों कहा?
4. बेंथम का यह विश्वास क्यों था कि लोकतांत्रिक सरकार ही नागरिकों के कल्याण का सबसे अधिक ध्यान रखेगी? उसने किन लोकतांत्रिक नियंत्रणों का सुझाव दिया?
5. जब कुछ टिप्पणीकार कहते हैं कि बेंथम का पैनॉप्टिकन सत्ता के एक सर्वथा भिन्न स्वरूप को प्रस्तुत करता है, तो उनका अभिप्राय क्या है?
6. बेंथम के लिए पैनॉप्टिकन का डिज़ाइन न केवल जेल, बल्कि स्कूल, फैक्टरी के लिए भी उपयुक्त था। आपके विचार में क्या यह कहना एक मिथक है कि आधुनिक स्कूल या कारखाने मुख्यतः अनुशासनात्मक संस्थान नहीं हैं?